Red Wings
Page No. ___ Date ___/___/20___

कक्षा - सा ६:
[गीत के बारे में] पाठ - 7

गीत की निम्नलिखित पंक्तियों को अपने आस-पास की जिंदगी में घटते हुए देख सकते है -
' हम मेहनत वालों ने जब भी मिलकर कदम बढ़ाया
सागर ने रास्ता छोड़ा, पर्वत ने सीस झुकाया'
' एक से एक मिलें तो कतरा, बन जाता है दरिया

साहिर ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि मेहनती व्यक्तियों ने हर संभव काम को संभव कर दिया है। परिस्थितियाँ उनको झुका नहीं पाती। वे परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेते हैं।

सीने और बाँहें को फौलादी इसलिए कहा गया है क्योंकि हमारे इरादे मजबूत हैं। लगातार मेहनत करते - करते हमारी भुजाएँ मजबूत हो गई हैं और हम आगे भी मेहनत के लिए तैयार हैं।

गीत से आगे

अपने आस-पास हम अपना 'साथी' मनुष्यों, अपने मित्रों, पशु पक्षियों और जानवरों को मानते हैं, क्योंकि वे हमें काम करने के लिए प्रेरित करते हैं।

अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक।
कक्षा, मोहल्ले के अपनी उम्र वर्ग के एवं एक समान आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिति वाले छात्रों के बीच हम इस सच्चाई को महसूस करते हैं।

हम एक साथ मिलकर काम करते हुए इसी गीत को गुनगुना सकते हैं।

माता-पिता के साथ उनके कामों में हाथ बँटाकर ध्यान रख सकते हैं।
पाय का काम फैक्ट्री में काम करना, बाजार से सामान लाना, बैंक से रुपए-पैसे लाना तथा माँ का काम खाना पकाना, सफाई करना, कपड़े सिलना, मेहमानों का स्वागत करना आदि हैं।

यह गीत कहानी के उस मोड़ पर आता है जहाँ पर गाँव वालों का सामना बहुत मुश्किल परिस्थितियों से होता है तथा सभी मिलकर एक साथ मेहनत करके उन परिस्थितियों पर जीत हासिल कर लेते हैं